राजस्थान की प्रमुख झीलें

चारो ओर स्थल से घीरा जलीय क्षेत्र।

राज्य मे झील

1. खारे पानी की झील
2. मीठे पानी की झील

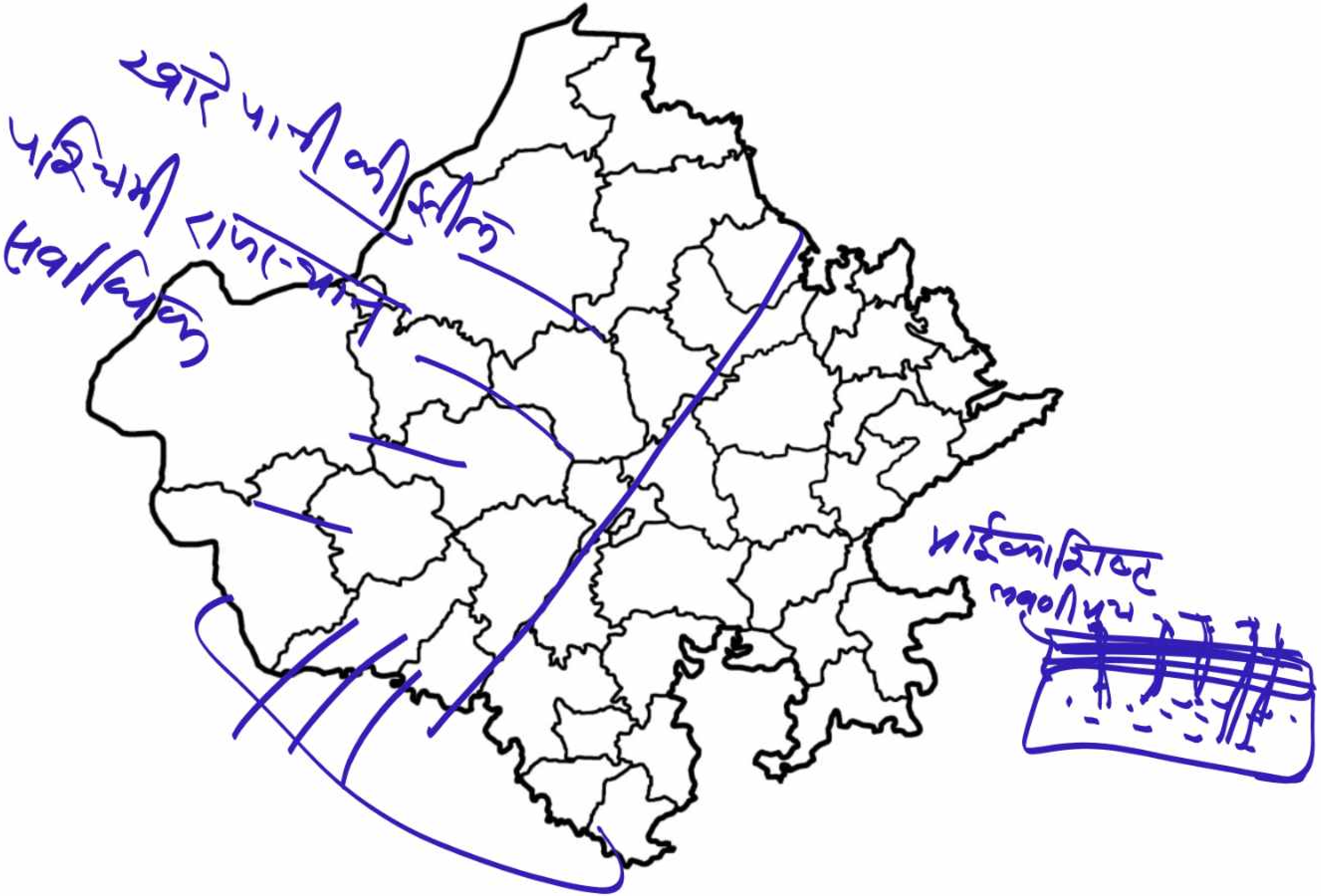
खारे पानी की झीलें
पश्चिमी राजस्थान
सर्वाधिक
माइकाशिस्ट

खारे पानी की झील

↳ राजस्थान की अधिकांश खारे पानी की झीलों का विस्तार पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में है।

→ पश्चिमी मरुस्थल में खारे जल के कारण

1. टेथिस सागर का अवशेष
2. इयोसीन / प्लिस्टोसीन काल में समुद्र
3. भू गर्भ में माईका, शिष्ट चट्टानों का विस्तार
4. केशाकर्षण → माईका, शिष्ट चट्टानों में केश के समान छिद्र पाये जाते है।

(5) दक्षिणी पश्चिमी हवाएं अपने साथ सोडियम क्लोराइड के कणों को लाती है जो गति कम होने के कारण उत्तर पश्चिमी राजस्थान मे छोड़ देती है।

→ राजस्थान का नमक उत्पादन मे स्थान ⇒ 3rd

Note → प्रथम स्थान - गुजरात

→ पुरे भारत का 12.5% नमक राजस्थान उत्पादित करता है।

→ राजस्थान मे लवण मंडी - नावां (डिडवाना कुचामन)

→ झीलों से नमक उत्पादन मे राजस्थान का स्थान → Ist

प्रमुख खारे पानी की झील

Trick

साड़ी का पलू कुता फाड़े रे

- सांभर झील - जयपुर अज
- डीडवाना झील
- कावोद, कहेर
- पचपदरा झील, पचभद्री
- लूणकरणसर झील
- कुचामन झील
- ताल छापर झील
- फलौदी झील
- डेगाना झील
- रेवासा झील

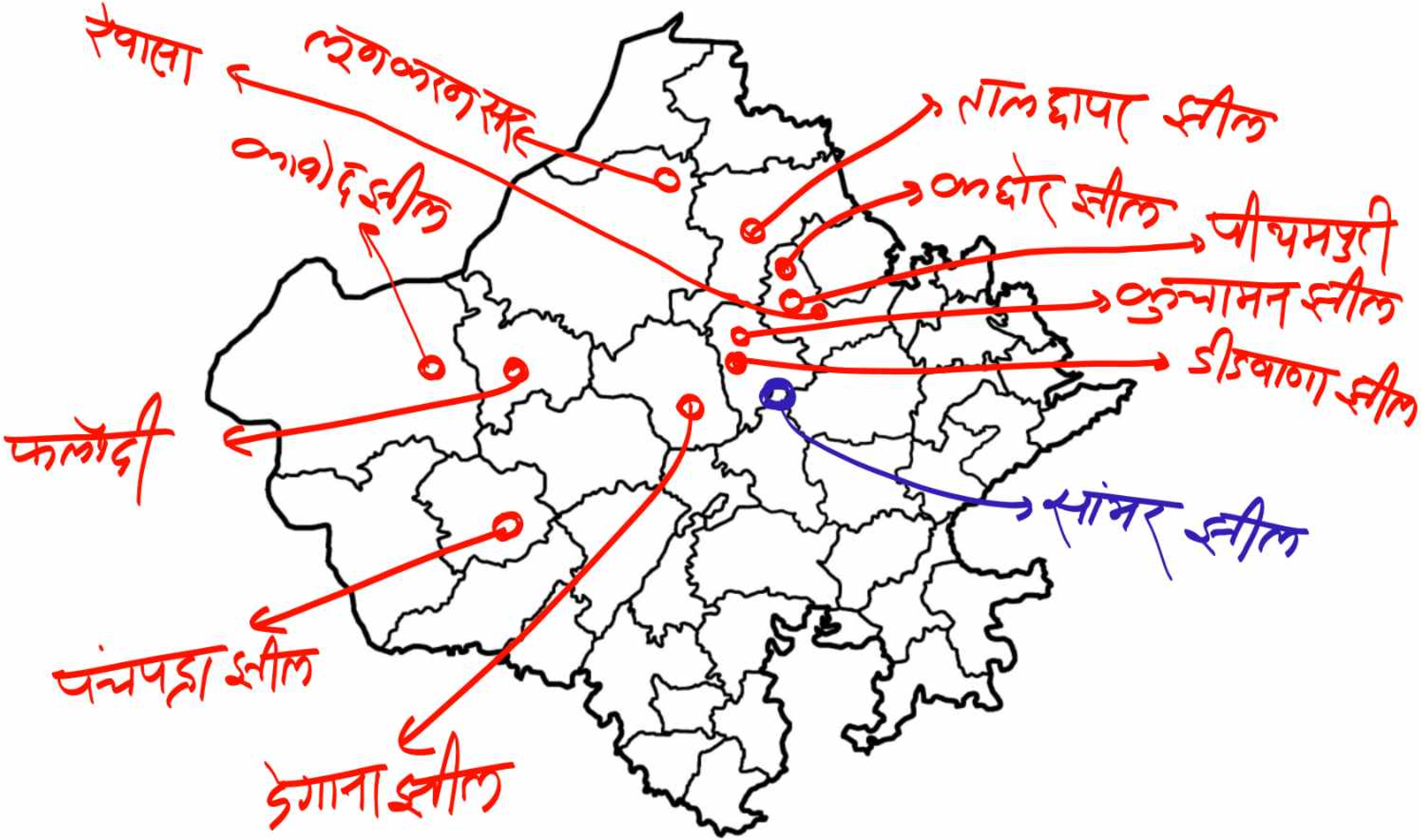
रेवासा
लूणकरणसर
तालछापर झील
कावोद झील
कछोर झील
पीथमपुरी
कुचामन झील
डीडवाना झील
फलोदी
सांभर झील
पंचपद्रा झील
डेगाना झील

सांभर झील : → फुलेरा (जयपुर)

→ विस्तार → जयपुर, अजमेर, डीडवाना कुचामन

→ निर्माण → वासुदेव चौहान (551 ई.)

→ जानकारी का स्रोत → बिजौलिया शिलालेख (भीलवाड़ा)

→ उत्कीर्ण → 1170

→ भारत की दूसरी सबसे बड़ी खारे पानी की झील है जो पूरे भारत का 8.70% नमक उत्पादित करती है।

नोट → भारत की सबसे बड़ी खारे पानी की झील → चिल्का झील (उड़ीसा)

→ इस झील के पश्चिम में शुष्क व पूर्व में अर्द्धशुष्क जलवायु है।

→ इस झील से खारापन कम करने हेतु साल्वेडोरा व स्वेडा फ्रुटीकोसा (स्पीशीज) वनस्पति सहायक मानी जाती है।

→ यहाँ केन्द्र सरकार का कारखाना हिन्दुस्तान सांभर साल्ट लि. की स्थापना - 1964 में की गई (3 सितम्बर 1964)

→ यह केन्द्र व राज्य का संयुक्त उपक्रम है जिसमें केन्द्र सरकार का 60% हिस्सा व राज्य सरकार का 40% हिस्सा है।

→ 1990 मे इस झील को रामसर साइट की सुची मे शामिल किया और नम भूमि (wet land) क्षेत्र घोषित कर दिया।

नोट :→ राजस्थान के दो स्थान रामसर सुची मे शामिल है

① सांभर झील

② केवला देव घना पक्षी विहार- भरतपुर

→ सांभर झील 3 से 12 किलोमीटर चौडी व 32 किलोमीटर लम्बी है इस का कुल अपवाह क्षेत्र 5000 वर्ग किलोमीटर

→ सांभर झील की समुद्र तल से औसत ऊँचाई - 367 मीटर है

→ यह राजस्थान का सबसे नीचा स्थान है

→ सांभर झील को पर्यटन के क्षेत्र में रामसर साइट के नाम से जानते हैं

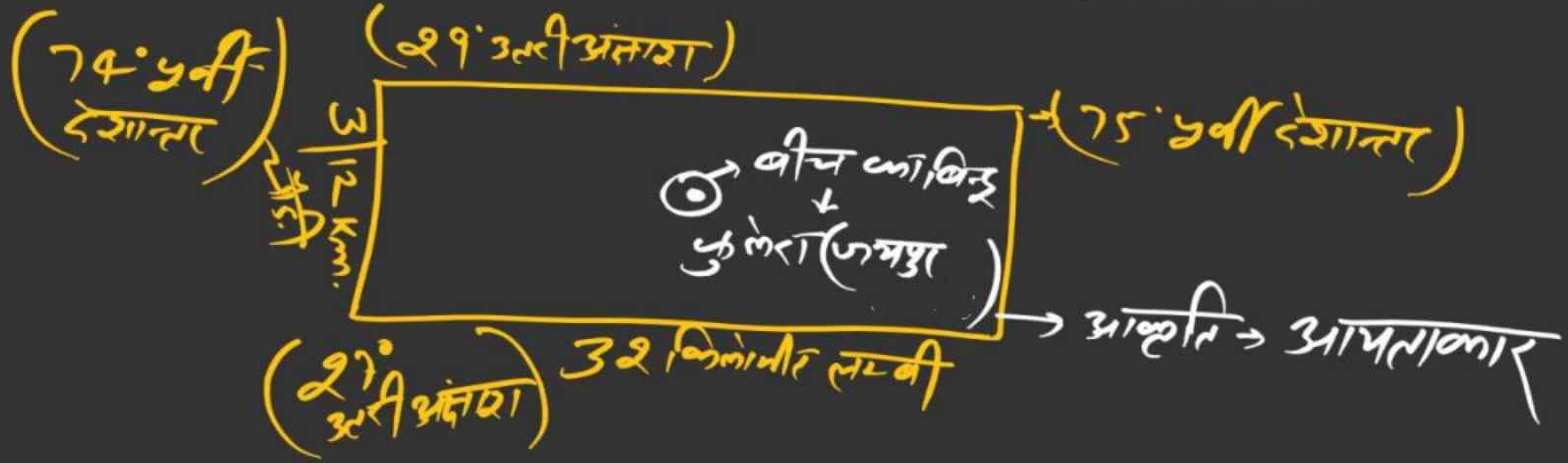

→ यहाँ पर गुजरात का राज्य पक्षी राजहँस शीतकाल मे भ्रमण हेतू आता है।

→ यहाँ विरह का प्रतीक पक्षी - कुरजाँ देखा जाता है।

नोट → कुरजाँ पक्षी हेतू प्रसिद्ध स्थान - खींचन गाँव (फलौदी)
→ गीत विरहणी द्वारा प्रियतम को सन्देश भिजवाने हेतू गाया जाता है।

→ सांभर झील मे आन्तरिक प्रवाह की नदियां - खारी, खण्डेला, रूपनगढ़ व मेंथा आकर गिरती है।

वर्ष-2019-20 में ये झील प्रवासी पक्षीयों की मौत के कारण चर्चा मे रही - पक्षीयों की मौत का कारण एविएन बॉटुलिज़्म नामक बिमारी बताया जो मिट्टी मे पाये जाने वाले क्लास्ट्रिडियम बॉटुलिनम बेक्टिरिया की वजह से फैली

→ पक्षीयों की मौत पर शोध → पक्षी अनुसंधान केन्द्र बरेली नोडिया

→ सांभर झील के पास 4000 mw का सोलर प्लांट प्रस्तावित है।

नोट → सांभर मे देश का पहला रेलवे ट्रायल ट्रेक बनाया गया है।

→ यहाँ पर PK फिल्म की शूटिंग हुई थी।

सांभर झील के पास दर्शनीय स्थल

① नालीसर मस्जिद

② शाकम्भरी माता मन्दिर

नोट → पूरे भारत मे शाकम्भरी माता के तीन मन्दिर है

① सांभर (जयपुर)

② उदयपुरवाटी (झुंझुनूं)

③ सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

③ देवयानी तीर्थ

नोट देवयानी तीर्थ को तीर्थो की नानी कहते है।

तीर्थो का मामा → पुष्कर (अजमेर)

तीर्थो का भान्जा → मचकुण्ड (धौलपुर)

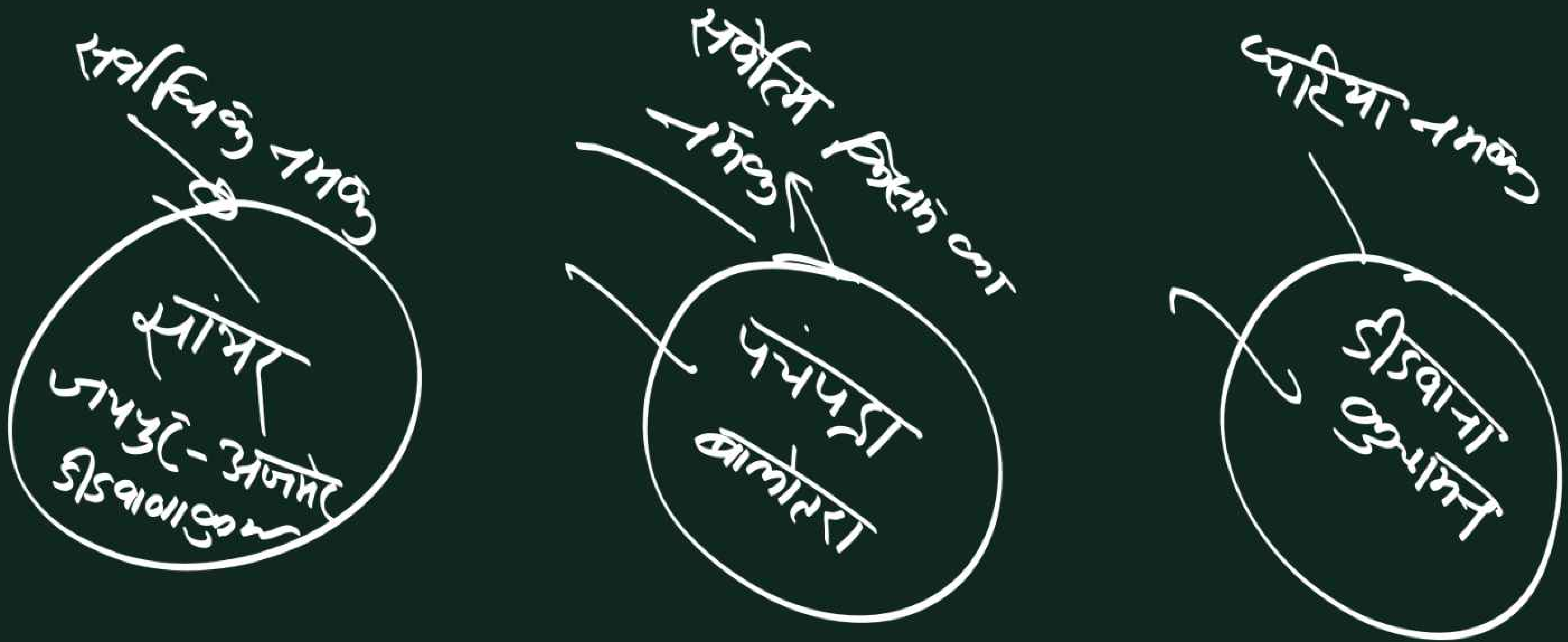

पंचपद्रा झील → बालोतरा

इस झील का नमक सर्वोत्तम किस्म का माना जाता है।

इस झील में 98% सोडियम क्लोराइड (NaCl) की मात्रा पायी जाती है।

यहाँ नमक निर्माण का कार्य खारवाल जाति द्वारा मोरली वृक्ष की झाड़ी की सहायता से किया जाता है।

→ यहाँ कुआँ बनाकर नमक तैयार करते हैं जिसे कोषिया विधि कहते है।

→ इस झील के नमक को स्थानीय भाषा में कोशालू कहते हैं।

डीडवाणा झील :→ डीडवाणा कुचामन

↳ इस झील मे सोडियम क्लोराइड की जगह सोडियम सल्फेट पाया जाता है यह अखाद्य पदार्थ है।

Na_2SO_4 → उपयोग → रंगाई छपाई, चमड़ा साफ करने व कीटनाशी निर्माण मे किया जाता है।

→ इस झील के नमक को डीडू कहते है।

→ 1960 मे यहाँ राजस्थान स्टेट कैमिकल्स वर्क्स की स्थापना की गई

→ यहाँ नमक बनाने वाली निजी संस्था को देवला/देवला कहते है।

अन्य झील :→

लुणकरण सर झील → बीकानेर

कापोद झील, पोकरण झील → जैसलमेर

डेगाना → नागौर

कुचामन झील → डीडवाना कुचामन

पिथमपुरी झील, रेवासा झील, कछोर → सीकर

फलौदी → फलौदी

तालछापर झील → चुरू

नमक निर्माण की विधि

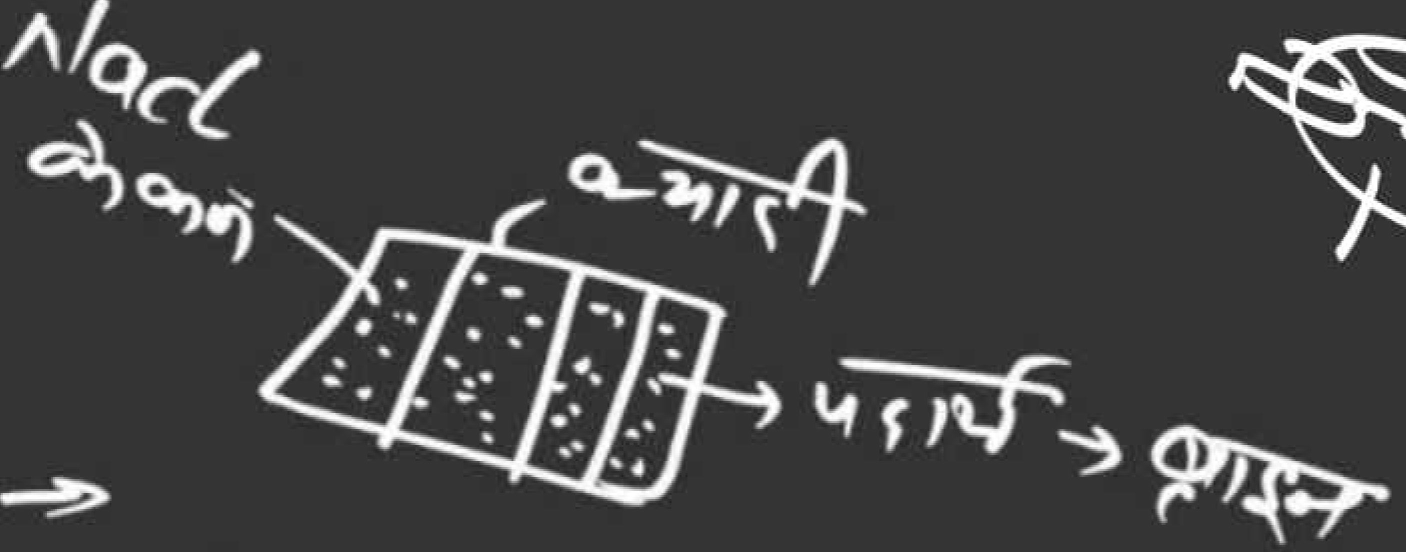

① **क्यार विधि** :→

↳ क्यारी बनाकर नमक निर्माण

क्यारियों मे डाला जाने वाला पदार्थ → **ब्राइन**

② **रेस्ग्रा/रेस्ता** :→ वायु प्रवाह से नमक निर्माण

→ मॉडल साल्ट फार्म / लवण फार्म → नांवा (डीडवाना कुचामन)

मीठे पानी की झीलें : →

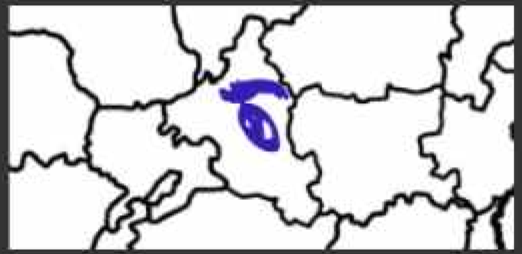

① **आना सागर झील** → अजमेर → निर्माण अर्णोराज / आना जी चौहान
↳ (1135-37 के मध्य बनवाया गया)

→ इस झील का निर्माण चन्द्रा नदी के जल को रोकना खून से रंगी धरती को साफ करने हेतु करवाया गया।

→ जहाँगीर ने यहाँ दौलत बाग का निर्माण करवाया जिसे वर्तमान मे सुभाष उद्यान कहते है।

→ शाह जहाँ यहाँ 1627 मे 5 संगमरमर के दरवाजो का निर्माण
करवाया जिन्हे बारहदरी कहते है

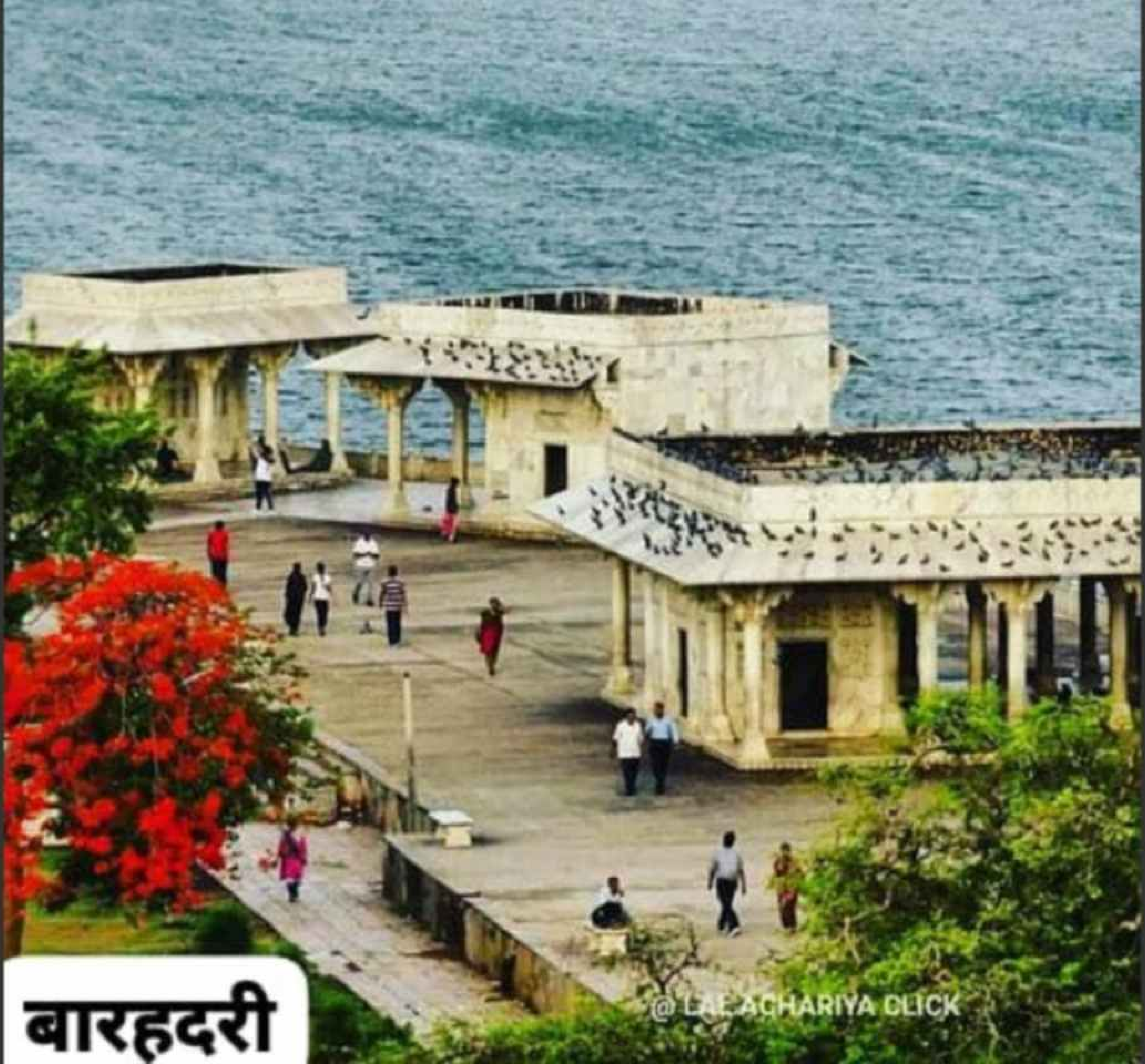
बारहदरी
@ LAL ACHARIYA CLICK

→ जहाँगीर की सास व नूर जहाँ की माता अस्मत बेगम यहाँ गुलाब से इत्र बनाने का आविष्कार किया।

→ 10/जनवरी/1616 को भारत मे व्यापार की अनुमति लेने वाला अंग्रेज व्यापारी सर टॉमस रो जहाँगीर से सर्वप्रथम दौलत बाग मे मिला।

→ मुलाकात मैगजीन दुर्ग मे हुई लेकीन व्यापार की चर्चा दौलत बाग में हुई

दर्शनीय स्थल
① चश्मा-ए-नूर झरना (जहांगीर द्वारा निर्मित)
② रूठी रानी का महल (नूर जहाँ का महल)

② <u>कोलायत झील</u> : → बीकानेर

उपनाम → शुष्क मरुस्थल का सुन्दर मरु उद्यान, कपिल सरोवर

→ ये झील सांख्य दर्शन के प्रणेता कपिल मुनी की तपोस्थल मानी जाती है यहाँ कपिल मुनी का आश्रम भी बना है

→ यहाँ कार्तिक पूर्णिमा को राज्य का विशाल मेला लगता है। जिसकी दीपदान परम्परा प्रसिद्ध है।

→ चारण जाति के लोग कोलायत मेले भाग नही लेते व कोलायत झील मे स्नान नही करते।